6 जुलाई 2010 के पुण्य स्मरण में

एकम् एव धीरूभाई अम्बाणी

– परिमल नथवाणी

लगातार प्रयासों, अथाग परिश्रम, घोर संघर्ष के उपरान्त लक्ष्यों की पाप्ति के फलस्वरूप धीरूमाई अम्बाणी एक महानायक बने । आपने अखूट राष्ट्रीय संपदा खड़ी की । साथ ही कतिपय नवीन मूल्यों की स्थापना की । बतौर एक उद्योगपति धीरूभाई अम्बाणी ने संसार के समक्ष एक उदाहरण प्रस्तुत किया और यह दर्शाया कि शेयरधारकों एवम् साधारण जनों की नजर में भरोसेमंद होना क्या चीज है। महात्मा गांधी ने कहा था **:** 'मेरा जीवन ही मेरा संदेश है।'

धीरूभाई अम्बाणी का जीवन भी कई लोगों के लिए संदेश देनेवाला रहा। वे एक मशालधारी थे। अनगिनत लोगों के लिए वे एक आदर्श पुरूष होने के बावजूद धीरूभाई अम्बाणी ने स्वयं कभी अपने नाम पर कोई 'वाद' या 'पंथ' चलाने की कोई चेष्टा, प्रचार–प्रकार या प्रयास नहीं किया। वे लगातार अपने उद्योग एवम् व्यवसाय में एक के बाद एक नए कीर्तिमान बनाते गए। जैसे कि राबर्ट फ्रोस्ट ने कहा था, उन्हों ने हंमेशां ऐसे रास्तों पर चलना पसंद किया जिन पर पहले कोई चल न पाया हो। आपने इस प्रकार दूसरों के लिए एक सलामत एवम् लम्बा रास्ता बनाया।

एक सच्चे कर्मयोगी के रूप में धीरूभाई अम्बाणी अपने कार्य से कभी निवृत्त नहीं हुए । वे लगातार नए नए विचार करते गए और उन्हें अंजाम देते रहे । वे हंमेशां कहते कि विचारों पर किसी का एकाधिकार नहीं है । वे असफलताओं से कभी विचलित नहीं होते थे । किसी भी अवरोध का वे डटकर और हिम्मतपूर्वक मुकाबला करते, लेकिन डर कर कोई कार्य अधूरा छोड़ नहीं देते। हम सब अक्सर कहते हैं कि 'हिम्मत–ए–मर्दा तो मदद–ए–खुदा।' धीरूभाई अम्बाणी ने अपने जीवन–काल में हंमेशां इस कहावत को चरितार्थ किया। हिम्मत से वे जिये और ईश्वर की कृपा उन पर बनी रही। किसी काम के बारे में कभी 'न' नहीं स्वीकार करते। इसके विपरीत, वे यह जानना चाहते कि किस प्रकार वह काम हो सकता हैं। धीरूभाई कभी ढाले बैठे न रहते। अपने नाम के प्रतिकूल उन्हें सदा जल्दी रहती। अपना काम पूरा करने की जल्दी। संसार के देशों की प्रगति की दौड़ में भारत पिछड़ जाए यह उन्हें मंजूर नहीं था। उन्हें देश के लोगों की शक्तियों

पर भरोसा था। वे अपने देश को दुनिया के शिखर के देशों की सूची में देखना चाहते थे। अपने कारोबार एवम् उत्पादनों के बूते पर संसार के कुछ बड़े देशों की सूची में उन्हों ने अपने आपको शामिल कर दिया और इस प्रकार अपना, अपनी कंपनी का तथा देश का नाम रोशन किया। भारतीय औद्योगिक अर्थव्यवस्था के कतिपय क्षेत्रों में आपने देश को आत्म-निर्भर बना दिया।

देश में एक समय ऐसा भी था जब सिन्थेटिक कपड़ा और खास कर के 80-20 नाम से प्रसिद्ध 80 प्रतिशत पॉलियेस्टर और 20 प्रतिशत सूत मिश्रित कपड़ा आम लोगों की पहुंच के बाहर था। वह देश में चोरी-छिपे स्मगलिंग के रास्ते से आता था। धीरूभाई अम्बाणी ने तत्कालीन राज्य-व्यवस्था के दायरे में रखकर पॉलियेस्टर के क्षेत्र में देश को आत्म-निर्भर बनाया और पर्याप्त उत्पादन-क्षमता विकसित की। पेट्रोरसायनों के क्षेत्र में भी आपने वही किया। अपने कारोबार के क्षेत्र में उन्हों ने जिस बेबाक जोश और साहस से 'वर्टिकल बैकवर्ड इन्टिग्रेशन' व्यूह-रचना के जरिये जो विकास हासिल किया उसकी वजह से देश में ऊर्जा-सुरक्षा के मामले में आमूल परिवर्तन हुआ। धीरूभाई अम्बाणी के कुशल नेतृत्व में मूकेशभाई अम्बाणी ने जामनगर में जो विशाल रिफाईनरी खड़ी की इससे पेट्रोल, डीजल, केरोसीन या एल.पी.जी. जैसे इंधनों के मामले में अपना देश जो एक नितांत आयात कर्ता देश था वह रातों रात इनकी निर्यात करने लगा। जिन्हों ने सत्तर एवम् अस्सी के इशक के खाड़ी युद्ध से पैदा हुए ईंधन के संकटों को देखा है वे लोग देश की ऊर्जा-सुरक्षा में धीरूभाई अम्बाणी और जामनगर रिफाईनरी के प्रदान को भली भांति समझ सकते हैं।

नेल्प के तहत तथा अन्यथा देश में और दिदेशों में तेल व गैस क्षेत्रों की नीलामी में बोली लगा कर धीरूभाई अम्बाणी ने अपने जीवन काल में ही अपनी दूरंदेशी का परिचय दे दिया था। इसकी बदौलत आज हम भारत के पूर्वीतट के गैस को देश के अन्य स्थानों के उद्योगों और घर घर में पहुंचाने की कल्पना को साकार कर रहे हैं। धीरूभाई खुद एक साधारण परिवार से आते थे। इसलिए आपने हंमेशां ऐसे उपायों एवम् उत्पादनों, बाजारों और उद्योगों एवम् अर्थतंत्र के ऐसे क्षेत्रों को अपनाया जिससे देश के साधारण आदमी के जीवन-स्तर को ऊपर उठाने में मदद मिल सके।

★ ★ ★

(श्री परिमल नथवाणी रिलायन्स इण्डस्ट्रीज लिमिटेड के ग्रुप प्रेसिडेन्ट हैं और राज्य सभा के सदस्य भी हैं।)